विश्वबंधुत्व हेतु अंतर्राष्ट्रीय समन्वय की आवश्यकता

डॉ. रेखा जैन
नई दिल्ली

आज पूरे संसार को विश्व बंधुत्व के रास्ते पर चलने की आवश्यकता है। जब तक हम सत्य, अहिंसा, विश्व बंधुत्व के रास्ते पर चलने का प्रयास नहीं करेंगे, तब तक शांति का संदेश अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नहीं पहुंचा सकते, और तब तक हम अपने आप को भी नहीं बदल सकते।

युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है, लेकिन सबसे बड़ी जीत युद्ध को जीत कर नहीं सामने वाले के दिल को जीत कर होती है। अगर विश्व बंधुत्व का पाठ हम सभी सीखकर इसका प्रचार–प्रसार कर सभी को सिखाएं तो हम सभी समन्वित होकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व को एकता के बंधन में बांध सकते हैं। आज हम सभी को मिलकर सीखना चाहिए और लोगों को जागरूक करना चाहिए। यदि हम अपने बच्चों को बचपन से ही विश्व बंधुत्व के बारे में, एकता के बारे में, समझाएंगे, तो बच्चे बचपन से ही विश्व शांति के बारे में जानेंगे, जिससे वे देश के हित में और विश्व के हित में अच्छे कार्य करेंगे। जिससे पूरा विश्व शांति की ओर बढ़ेगा और हमारे देश का नाम रोशन होगा।

हम सबको मिलकर संयुक्त राष्ट्र संघ का साथ देना चाहिए, जिससे विश्व में शांति का विकास हो, और पूरा अंतर्राष्ट्रीय समुदाय सुख का अनुभव कर सके। आज का इंसान अपनी आवश्यकता को पूरी करने के लिए दूसरों का फायदा उठाता है, भले ही चाहे सामने वाले का नुकसान हो जाए। अपनी खुशी के लिए दूसरों को दुखी करना ठीक बात नहीं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के अनुसार– "व्यष्टि में समष्टि के चिरंतन सत्य एवं सदियों के अनुभव का साक्षात्कार किया। वास्तव में एकात्मक मानव दर्शन भारत की सनातन संस्कृति एवं चिरंतन जीवन पद्धति की युगीन व्याख्या है। परस्पर समन्वय एवं आंतरिक तात्विक जुड़ाव पर अवलंबित रहने के कारण विस्तारवादी एवं महत्वाकांक्षाओं पर विराम लगा।" विश्व बंधुत्व की भावना को सच्चे एवं वास्तविक अर्थों में साकार करता है।

विश्व बंधुत्व की भावना को सच्चे मन से अपनाये बिना मानवता अधूरी है, मनुष्य अधूरा है, धर्म और संस्कृति अधूरी है, तथा राष्ट्र और विश्व भी अधूरा है, और साथ में पंगु भी है। यह अंतर्राष्ट्रीय अनिवार्यता है, यदि हम विश्व को श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं, तो हमें विश्व बंधुत्व की भावना को आत्मसात करना होगा।

देश की छोटी हलचल का प्रभाव आज संसार के सभी देशों पर किसी न किसी रूप में अवश्य पड़ता है, फलतः समस्त देश अब यह अनुभव करने लगे हैं कि पारस्परिक समन्वय, स्नेह, सद्भाव, सांस्कृतिक आदान–प्रदान और भाईचारे के बिना उनका काम नहीं चलेगा। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना, निर्गुट शिखर सम्मेलन, दक्षेस, जी–15 आदि वसुधैव कुटुंबकम् के ही रूपान्तरण हैं।

संत पापा ने कहा कि हम सब एक ही ईश्वर के द्वारा रचे गए हैं, एक ही स्वर्ग के नीचे जीवनयापन कर रहे हैं, इस नाते हम सब भाई–बहन हैं। हम चाहते हैं कि विभिन्न धर्मों व धार्मिक परंपराओं के अनुयायियों में एक दूसरे के प्रति एकात्मकता, प्रेम एवं मातृत्व की भावना जागे, और हम जरूरतमंदों की मदद को तैयार रहें।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का दर्शन आतंक से पीड़ित मानवता के लिए एक वैश्विक वरदान है। विभिन्न राजनीतिक दलों, कार्यकर्ताओं, नेताओं के लिए उनका व्यक्तित्व ऐसा दर्पण है,

जिसमें झांककर वे अपना–अपना आंकलन कर सकते हैं। प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा साधनों से नहीं साधना से मिलती है।

अंतर्राष्ट्रीय कल्याण के लिए विश्व बंधुत्व की भावना से मिलकर समाधान करना है, ना कि स्वार्थ की भावना रखनी चाहिए। विश्व के कल्याण के लिए विश्व बंधुत्व बहुत ही जरूरी है। हर किसी को इसका प्रचार–प्रसार करना चाहिए। पूरे विश्व को इसकी जरूरत है। एक साथ चलने से, एक साथ मिलकर रहने से, कभी किसी का कुछ बुरा नहीं हो सकता, इसलिए विश्व बंधुत्व की बात कही गई है। विवेकानंद जी भी विश्व बंधुत्व की बात कहते थे क्योंकि युद्ध मानवता के लिए बहुत बड़ा खतरा है। समन्वय से ही इसे बचाया जा सकता है। विश्व बंधुत्व की भावना एकता के कार्यों को आसान बनाती है। इसका सबसे बड़ा गुण सत्य और अहिंसा ही है।

समन्वय का प्रयास

अंतर्राष्ट्रीय समन्वय हेतु हमें परस्पर सद्भाव एवं सम्मान की भावना से लोगों के बीच सभी मतभेदों को दूर करना चाहिए और अलग–अलग विचारधाराओं को एक करने के लिए प्रयत्न करते रहना चाहिए।

दूसरा प्रयास; सहानुभूति को बढ़ावा देना चाहिए। भ्रातृत्व का विचार, सामाजिक सुरक्षा का विचार, मूलरूप से ऐसा विचार हैं, जहां हमें एक दूसरे का ध्यान रखना चाहिए।

तीसरा प्रयासः समाज में सामाजिक एकजुटता एक प्रमुख घटक है। न्याय के लिए लड़ाई उन लोगों के लिए लड़नी चाहिए, जो अन्याय को बढ़ावा देते हैं।

चौथा प्रयासः सामूहिक देखभाल, राजनीतिक जीवन में बंधुत्व की विफलता का प्रमाण है। जिससे निपटने के लिए सामूहिक देखभाल की अवधारणा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सामाजिक सुरक्षा का विचार मूल रूप से ऐसा विचार है, जहां हमें एक दूसरे का ध्यान रखना चाहिए।

पांचवां प्रयासः भाईचारे को बढ़ावा देना चाहिए। जब किसी विशेष धर्म जाति, वर्ग को लक्षित करने वाले घृणित अपराधों के कारण जब समाज के बाकी लोग चुप रहते हैं तो समाज में भाईचारा विफल होने लगता है। इसलिए उन मुद्दों पर निरंतर आवाज उठाई जानी चाहिए। विभिन्न समाज सुधारकों ने इन्हीं बुराइयों को समाप्त करने का प्रयास किया। इनके द्वारा न केवल भारतीय समाज जागृत हुआ बल्कि उसमें अन्तर्राष्ट्रीय विश्वबंधुत्व की भावना का समन्वय भी हुआ, जिसकी आज सभी को अत्यधिक आवश्यकता है।

उपसंहार

विश्व बंधुत्व की भावना आज के समय की महती आवश्यकता है यह अवधारणा भारतीय मनीषियों के सूत्र ''वसुधैव कुटुंबकम्'' पर आधारित है, जो शाश्वत तो है ही, व्यापक एवं उदार नैतिक समन्वय पर भी आधारित होनी चाहिए। इसमें किसी प्रकार की संकीर्णता के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। समन्वय इसकी अनिवार्य शर्त है।

आज वैश्वीकरण का युग है। विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण संसाधनों और उत्पादकों की त्वरित प्राप्ति के लिए परस्पर एक–दूसरे के सह अस्तित्व व समन्वय की भावना को भी बढ़ावा देना चाहिए। किसी भी राष्ट्र की छोटी बड़ी प्रत्येक गतिविधि का प्रभाव आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देखने को मिल रहा है। परिणामस्वरूप सभी देश यह अनुभव करने लगे हैं कि, पारस्परिक सहयोग, समन्वय, स्नेह, सद्भावना, सांस्कृतिक आदान–प्रदान और भाईचारे के समन्वय के बिना अब उनका काम नहीं चलेगा। संसाधनों की बढ़ती मांग और उसकी पूर्ति के प्रयासों ने पारस्परिक दूरियों को समाप्त कर दिया है। फलस्वरूप विश्व बंधुत्व का विशाल दृष्टिकोण वर्तमान परिस्थितियों में परम आवश्यक है।